फल/फली छेदक कीट (हैलिकोवरपा आर्मीजेरा) का एकीकष्त प्रबन्धन

फल/फली छेदक कीट (हैलिकोवरपा आर्मीजेरा) : एक बहुत ही हानिकारक जीव है जो कि हर फसल पर आक्रमण कर उन्हें नुकसान पहंचाता है इस कीट का प्रकोप मुख्यताः चना, मटर, फ्रासबीन,भिंड़ी, टमाटर और गोभी में अधिक देखा गया है। किसानों के लिए यह आवश्यक है कि वे इस कीट के बारें में पूर्ण जानकारी रखें, ताकि उचित समय पर इस कीट की रोकथाम के लिए पग उठा सकें।

पहचान :– इस कीट का पतंगा पीले भूरे रंग का तथा अगले पंख के ऊपरी सतह पर अनियमित काले रंग के धब्बे एवम् पंख के किनारों पर धूसर रंग की धारियां होती हैं। इस कीट की पूर्णतया विकसित सुण्डी 35–40 मि0मी0 लम्बी हरे रंग की तथा दोनों तरफ सफेद रंग की एक–एक पट्टी एवं शरीर पर हल्के–2 बाल पाए जाते हैं।

जीवन चक्र :– इस कीट की मादा पतंगा पौधे के नाजुक हिस्सों पत्तियों एव्म फूल पर एक–एक करके चमकीले, मलाई के रंग के 700–1000 अण्डे देती हैं। यह अण्डे 4–5 दिन में फूटते हैं। जिससे सुण्डियां निकलती हैं। सुण्डियां लगभग 20 दिन में पूर्णतया विकसित होती है उसके बाद लगभग 10–12 दिन तक कीटकोष (प्यूपा) के रूप में जमीन के नीचे या अन्य घास की पत्तियों में पड़ी रहने के बाद पतंगा या वयस्क बनकर बाहर निकलती हैं।

क्षति/नुकसान :– इस कीट की केवल सुण्डियां ही नुकसान पहुंचाती हैं। कीट का प्रकोप फसल की प्रारम्भिक अवस्था से ही शुरू हा जाता है। पहले पौधे के नरम भागों को एवं बाद में फल व बीज बनने पर उन्हें खाती है। सुण्डियां अपना सिर फल/फली के अन्दर घुसा देती है जबकि शरीर का शेष भाग फली बना रहता है।

कीट प्रबन्धन :– इस कीट के प्रबन्धन अर्थात् कीट आर्थिक हानि स्तर तक न पहुंचे इसके लिए आवश्यक है कि फसल की शुरूआती अवस्था से लेकर फसल पकने के समय तक किसान कम से कम सप्ताह में एक बार अपने खेत में अवश्य जाकर कीट प्रकोप के स्तर को देखें जिससे उचित समय पर कीट प्रबन्धन की विभिन्न विधियों को अपनाया जा सके, जो निम्नलिखित हैं :–

(अ) व्यवहारिक क्रियाऐं :

1. गर्मियों में गहरी जुताई करे ताकि खेत में उपस्थित प्यूपा या तो धूप में मर जायेंगे उन्हें पक्षी खाकर नष्ट कर देंगे।
2. कीट प्रतिरोधी एवम् कीट सहनशील किस्में उगाऐं।
3. 3–4 वर्षीय फसल चक्र अपनाएँ।
4. एक ही एवम् उचित समय में विस्तष्त क्षेत्र में फसल उगायें।
5. मुख्य फसल के साथ–2 किनारों पर तथा 10–15 पंक्तियों के बाद कीट को आकर्षित करने वाली फसलें जैसे गेदा, सरसों लगाऐं।
6. सिचाई एवम् खाद का उचित प्रबन्ध करें।

(ब) यान्त्रिक क्रियाऐं :–

1. कीट का प्रकोप बढ़ने पर उनके अण्डे एवम् सुण्डियों को इकटठा करके नष्ट कर दें।
2. फेरोमोन ट्रैप का प्रयोग करें, जिसमें समय पर कीट कें आगमन का पता चल जाता है, और साथ ही नर पतंगो को पकड़े जाने से कीट की अगली पीढ़ी रूक जाती है। इस यंत्र में एक छोटी स्वर में कष्त्रिम रूप से एक ऐसी गंध लगा दी जाती है। जैसी गंध मादा की कीट नर कीट को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए छोड़ती है। नर कीट यह सोचकर इसके पास आता है कि यहां मादा बैठी है, लेकिन वह नीचे लगे पोलीथीन में फंस जाता है।
3. फसल पर नुकसान कर रही सुण्डियों को पकड़कर किसी बोतल या जार में बंद कर दें ये सुण्डियां का दूसरे खाकर मर जाती है।

(स) जैविक क्रियाऐं

फसलों को नुकसान करने वाले कीटों को मारने वाले विभिन्न प्रकार के मित्र कीट प्राकषतिक रूप से फसलों में पाए जाते है।, जाकि काफी हद तक फसल सुरक्षा में सक्षम हैं। लेकिन पिछले काफी समय से फसल सुरक्षा के लिए रसायनों के अंधाधंध प्रयोग से मित्रकीटों की संख्या काफी कम हो गई है जिन्हें प्रयोगशाला में बढाकर यदि खेतो में छोड़ा जाए तो यह मित्रकीट शत्रुकीट की विभिन्न अवस्थाओं को नष्ट कर देते हैं, जैसे :–

- अण्ड परजीवी–ट्राइकाग्रामा की विभिन्न प्रजातियां।
- अण्ड सुण्डी परजीवी– किलानिस ब्लैकवर्नी।
- सुण्डी परजीवी–ब्रेकान इत्यादि।
- कीटकोष या प्यूपा परीजीवी–टेट्रस्टिकस।
- परभक्षी–मकड़ी, ड्रेगन फलाई, डेमसेल फलाई, क्राईसोपा इत्यादि।
- एन0पी0वी0 (नाभकीय बहुभजीय वायरस) की 500–700 सुडियों के बराबर घोल में 1% गुड़ या चीनी मिलाकर प्रति हैक्टैयर की दर से शाम से छिड़काव करें या बी0टी0 (बेसिलस यूरिनजाइन्सिस प्रजाति कुरस्ताकी का 1.5–2 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।)

- नीम आधारित दवाईयो का इस्तेमाल करें।

(द) रासायनिक क्रियाऐं

रासायनों का प्रयोग अन्तिम उपाय के रूप में करें, यदि ऊपर बताए गए सभी तरिकों के बाद भी कीट प्रकोप आर्थिक हानिस्तर से ऊपर रहें, ऐसी स्थिति आने पर उन रासायनों का प्रयोग करें जोंकि मित्र कीटों के लिए सुरक्षित हो अर्थात जिनका वातावरण के साथ साथ मित्र कीटों पर भी बुरा प्रभाव न पड़े।